प्रकाशनार्थ

पटना, **19 जून।** पटना में स्मार्ट सिटीज मिशन के तहत विकसित की जा रही अधिकांश बुनियादी परियोजनाओं में सक्रिय नागरिक भागीदारी का अभाव है। नागरिक भागीदारी के अर्नस्टीन सीढ़ी के ढांचे से जांच करने पर, शहर में कोई भी स्मार्ट परियोजना नागरिक सशक्तीकरण की उच्चतम श्रेणी में नहीं पाई गई है। ये निष्कर्ष एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीच्यूट (आद्री) के डॉ. दीपक कुमार ने आज आद्री द्वारा अपने संस्थापकों - डॉ. शैबाल गुप्ता और डॉ. प्रभात पी घोष की स्मृति में आयोजित किए जा रहे अनुसंधान नवाचार सप्ताह के दूसरे सप्ताह के दौरान प्रस्तुत किए। उत्पादन के बिंदु से डेटा क्लीनिंग पर बोलते हुए आद्री के ही अंशुल और पवन लाल ने बताया कि डेटा की सटीकता के लिए परिशुद्धता और वैधता महत्वपूर्ण हैं। डेटा की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए, एक अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई निगरानी और मूल्यांकन रूपरेखा महत्वपूर्ण है। जीआईएस तकनीक का उपयोग वास्तविक समय की फील्ड मॉनिटरिंग को सुविधाजनक बनाने में मदद करता है।

डेटा निर्माण के बिंदु से डेटा क्लीनिंग पर बोलते हुए आद्री के अंशुल और पवन लाल ने बताया कि डेटा की सटीकता के लिए परिशुद्धता और वैधता महत्वपूर्ण है। डेटा की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए, एक अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई निगरानी और मूल्यांकन रूपरेखा महत्वपूर्ण है। जीआईएस तकनीक का उपयोग वास्तविक समय की फील्ड निगरानी को सुविधाजनक बनाने में मदद करता है।

इससे पहले आद्री की सदस्य-सचिव डॉ. अश्मिता गुप्ता ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। सीएसईसी-आद्री के गुलशन पटेल ने केंद्र सरकार की योजना ग्रीन स्किल्स डेवलपमेंट प्रोग्राम (जीएसडीपी) के महत्व और दायरे के बारे में विस्तार से बताया और बताया कि कैसे आद्री ने युवाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करके इसके क्रियान्वयन में मदद की है। आद्री के अभिषेक प्रसाद और आलम मोजाहिद ने आद्री द्वारा किए जाने वाले सामाजिक प्रभाव आकलन अध्ययनों की कार्य-प्रणाली की रूपरेखा प्रस्तुत की। ये अध्ययन सार्वजनिक परियोजनाओं के निर्माण से प्रभावित लोगों पर भूमि अधिग्रहण के प्रभाव का मूल्यांकन करते हैं। आद्री के मौसम बहार ने छ: भुजा वाले हेक्सापॉड स्पाइडर रोबोट की विशेषताओं का वर्णन किया। उन्होंने दिखाया कि किस तरह यह रोबोट अपने सर पर स्तिथ भुजा से पर्यावरण से इंटरैक्ट कर सकती है। उनकी प्रस्तुति आद्री में अनुसंधान प्रमुख डॉ. मौसमी गुप्ता के मार्गदर्शन में दी गई। आद्री के ही आशीष ठाकुर ने कहा कि बीटी कॉटन के जगह किफायती और टिकाऊ विकल्प वाला काला कॉटन (एक देशी किस्म) की खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इस कार्यशाला में कई विद्वान और नवोदित शोधकर्ता वर्चुअल और व्यक्तिगत रूप से शामिल हुए।

(अभिषेक प्रसाद)